नाम – डॉ. मोती लाल शाकार

महाविद्यालय का नाम – दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

संकाय – कला

पदनाम – सहायक प्राध्यापक

विषय – भाषाविज्ञान

शीर्षक – 'वाक्य के निकटतम अवयव'

वाक्य के निकटतम अवयव

डॉ. मोती लाल शाकार
सहायक प्रध्यापक
दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

वाक्य एक संघटक है और संघटक के संयोजक तत्त्व अवयव कहलाते हैं। किसी साघन के समस्त संघटकों का पारस्परिक सम्बन्ध एक जैसा नहीं होत। उनमें से कति- एक दूसरे से सुसम्बद्ध होते हैं। इन सुसंबद्ध संघटकों को समीपी या निकटस्थ अवयव (Immediate Constituents) कहते हैं। यह निकटत स्थान की न होकर अर्थ की होती है।

जैसे-Is he going?,

इसमें तीन अवयव हैं। देखने में 'इज' 'ही' के निकट है किन्तु वह वास्तविक रूप में'ही' की तुलना में 'गोइंग' के अधिक निकट है। इस वाक्य में 'इज' 'गोइंग' का निकटतम अवयव है और फिर ये दोनों मिलकर 'ही' के निकटस्थ हैं। निकटस्थ अवयव हे आधार पर ही किसी वाक्य या वाक्यांश का अर्थ स्पष्ट होता है। हिन्दी का एक वाक्य लें-'मोहन का भाई बम्बई भाग गया।' 'भाई' का निकटतम अवयव 'मोहन' है जबकि गया का निकटतम अवयव बम्बई है। य यपि प्रयोग में दूरी है।

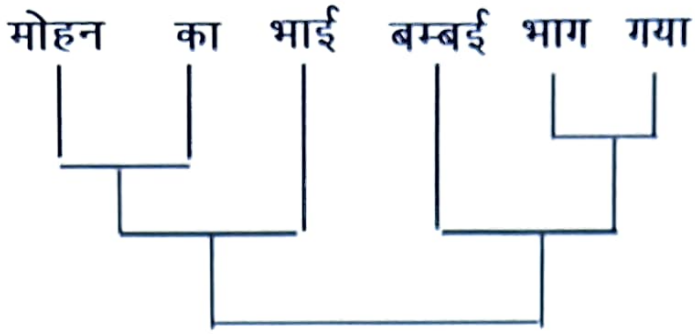

वस्तुत: निकटस्य अवयव वह आधार है, जिसके विश्लेषण के आधार पर किसी वाक्य अथवा रचना का ठीक-ठीक अर्थ जाना जा सकता है। एक रचना है. सुन्दर फूलों और फलों से भरा उपवन ।१

निकटतम अवयव की दृष्टि से इसके दो विश्लेषण हो सकते है और दोनो के अनुसार अर्थ में अन्तर आ जायेगा ।

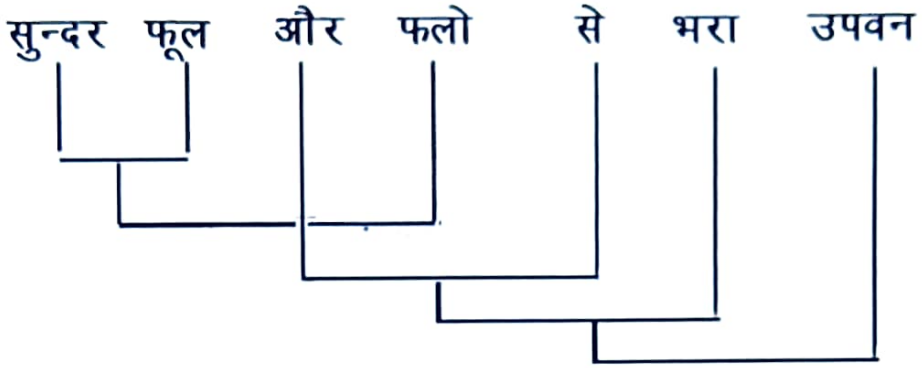

इस विश्लेषण 'सुनदर' शब्द 'फूल' और 'फलो' दोनो का विश्लेषण है। मुहावरेदार और मुहावराविहीन प्रयोगों में भी इसका अन्तर मिलता है-

मोइन रोटी खा रहा है।
मोहन का सर चक्कर खा रहा है।
पहले वाक्य में 'रोटी', 'खा' का निकटस्य अवयव है-

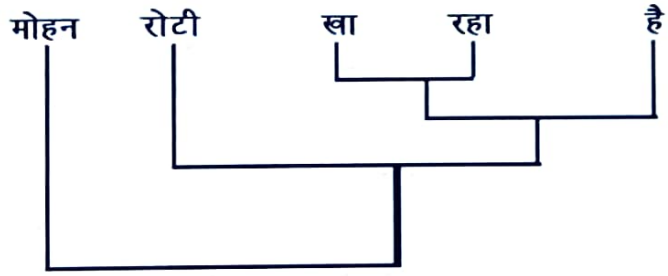

जबकी दूसरे वाक्य में 'चक्कर', 'खा' का निकटस्थ है और फिर दोनों मिलकर 'रहा है' के निकटस्य है-

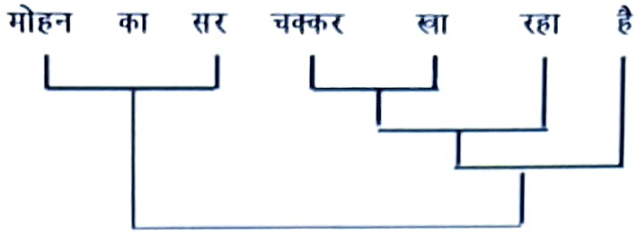

'रुको, मत जाओ' तथा 'रुको मत, जाओ'

ये भी यहा अन्तर स्पष्ट है-

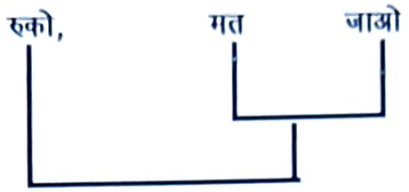

यहा 'मत' पहले वाक्य में जाओ का निकटस्थ है तो दूसरे वाक्य में 'रुको' का निकटस्थ है।

वाक्य-रचना में परिवर्तन

किसी भी भाषा की वाक्य -रचना हमेशा एक जैसी नही रहती, उसमें निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। इसी प्रकार मूल भाषा से विकसित भाषाओं की वाक्य-रचना में भी परिवर्तन हो जाता है। यथा-संस्कृत से विकसित हिन्दी। संस्कृत और हिन्दी की वाक्य-रचना में पर्याप्त भिन्नता आ गयी है। संस्कृत में विभवित, प्रत्यय, संयुक्त होने के कारण किसी भी पद का वाक्य के किसी भी स्थान पर प्रयोग हो सकता है, किन्तु हिन्दी में इनका स्थान नियत हो गया है। साथ ही संस्कृत वाक्य-रचना में कर्त्त या कर्म के लिंग का किया पर प्रभाव नही पड़ता था किन्तु संस्कृत से ही विकसित हिन्दी में ऐसा प्रभाव पड़ता है। यथा-

रामः गच्छति = राम जाता है।
गीता गच्छति = गीता जाती है।

परिवर्तन के कारण

वाक्य-रचना में परिवर्तन के निम्नलिखित मुख्य कारण माने जाते है-

(१) अन्य भाषाओं का प्रभाव : एक भाषा-भाषी जब दूसरी भाषा के राजनीतिक प्रभाव में आता है तो लगभग उसकी यह अनिवार्यता हो जाती है कि वह दूसरी भाषा के वाक्यात्मक संरचना का कुछ-न-कुछ ग्रहण करे। मुगल शासन के प्रभाव के परिणाम-स्वरुप आदर के लिए बहुवचन का प्रयोग फारसी से हिन्दी में आया। पहेले यह न तो संस्कृत में था, न ही पालि, प्राकृत और अपभ्रंश में। यथा-

मेरा नौकर आ रहा है।
मेरे पिता आ रहे है।

यहाँ 'मेरे' और 'रहे है' का आदरार्थक बहुवचन में प्रयोग हुआ है।

इसी प्रकार कई संज्ञाओं और कियाओं के एक साथ आने पर अन्तिम के पूर्व 'और' का प्रयोग अंग्रेजी का प्रभाव है। यथा-

राम, श्याम और मोहन आ रहे हैं।

हिन्दी में 'कि' का प्रयोग भी फारसी का प्रभाव है। मैं चाहता हूँ कि वह चला जाए'।

भविष्यत् काल के लिए अपूंण वर्तमान का हिन्दी में प्रयोग भी अंग्रेजी का प्रभाव है जो हिन्दी में काफी प्रचलित है। यथा-

राष्ट्रपति अगले महीने अमेरिका जा रहे हैं।
पिता जी कल आ रहे हैं।

कठिनाई होने लगती हैं। अतः वाक्य में सहायक शब्द (परसगं,सहायक क्रियाएं) जोडे जाने लगते हैं। साथ ही वाक्य में पदक्रम निश्चित हो जाता है। प्राचीन जर्मन और संस्कृत की तुलना में इन्ही से विकसित क्रमशः अंग्रेजी और हिन्दी में पदक्रम नियत है।

(३) **स्पष्टता तथा बल के लिए अतिरिक्त शब्दों का प्रयोग** : इसके कारण भी किसी भाषा के वाक्य में अनेक अतिरिक्त शब्द आ जाते है। यथा-कृपया मत जाइए। यथा- कृपया मत जाइए।
इस वाक्य में 'जाइए' अपने- आप आदरसूचक है फिर भी 'कृपया' जोडा गया है जिसकी आवश्यकता नहीं थी। इसी प्रकार अंग्रेजी में भी-में 'बैंक' अनावश्यक है। हिन्दी में परसर्गो का प्रयोग स्पष्टता के लिए ही होता है।

(४) **नवीनता** : कभी-कभी नवीन के आग्रह के परिणामस्वरूप कुछ नये शब्द चल पडते है जिनसे वाक्य-संरचना में अन्तर आ जाता है।

(५) **बोलने वालों की मानसिक स्थिति में परिवर्तन** : व्यक्ति सुख-दुख,विपद आपदाओं से हमेशा घिरा रहता है जिस तरह उसके मन के आन्तरिक भाव उसकी क्रियाओं को प्रभावित करते है,उसी प्रकार उसकी वाक्य-संरचना को भी । अतः दुखी और प्रसन्न व्यक्ति की वाक्य-संरचना एक जैसी नही होती। वह किंचित् परिवर्तित होती है।

(६) **संक्षेप** : संक्षिप्तता भी वाक्य-परिवर्तन का कारक है। यथा-'नहीं जाता हैं-का'नहीं जाता'।

(७) **बल के लिए क्रम परिवर्तन** : जाऊँगा तो-जाऊँ तो गा । यहाँ पचत्रम में परिवर्तन बल डालने के उद्देश्य से किया गया है।